Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

The True History of shree Rishabhdeo

श्री ऋषभदेवजी - केशरियाजी का इतिहास

—: लेखक :—

विद्यारत्न : पं० मोतीलाल मार्तण्ड (एम. ए.)

ग्रा० संयोजक, जैन मिशन
ऋषभदेव, (राजस्थान)

(श्री 'ऋषभचरितसार' आदि के रचियता)

प्रकाशक को सर्वहक स्वाधीन

शाह महावीरप्रसाद चंदनलाल भँवरा जैन

दसवी बार	सन्	मूल्य
१०००	१९८७	३)५०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केशरियाजी
आगमन पर

हम आपका हार्दिक
अभिनन्दन करते हैं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साभार निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक अतिशयक्षेत्र श्री केशरियाजी के संक्षिप्त इतिहास का चतुर्थ संस्करण है। समयाभाव से मैं चाहते हुए भी अपेक्षित प्रमाण संग्रह नहीं कर सका और न भाषा शैली में सुधार किया है, तथापि सत्य-प्रतिपादन करने से संतोष है।

तीर्थ के जिन विद्वान इतिहासकारों से इस पुस्तक में सहायता ली गई है एवं जिन्होंने परिमार्जित रुप से द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ संस्करण के लिये प्रेरणा दी थी, सबको साभार धन्यवाद देता हूं। शीघ्रता में त्रुटिता रह जाना सम्भव हो अतः क्षमा प्रार्थी भी हूं। तीर्थ के इतिहास–विद्वानों की दृष्टि में यदि अब भी संशोधन की आवश्यकता हो तो सूचित करने का कष्ट करें, जिससे आगे संस्करण में सुधार किया जा सके।

"श्रीऋषभचरित" की रचना में व्यस्त रहने से प्रस्तुत इतिहास संक्षिप्त ही लिख सका हुं तथा समयाभाव से चतुर्थ संस्करण भी वैसा ही प्रकाशित हो रहा है।

—लेखक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—: विषय सूची :—

१	साभार निवेदन	१
२	वन्दना	३
३	श्री केशरियाजी : एक परिचय	४
४	भ० ऋषभ की मनोज्ञा प्रतिमा	६
५	तीर्थ का सुन्दर विशाल मन्दिर	१३
६	धुलेव ग्राम का अभ्युदय	२५
७	मन्दिर की प्रतिष्ठा व ध्वजादण्डारोहण	२६
८	तीर्थ का चमत्कार	३७
६	तीर्थ का वर्तमान रुप	४१
१०	विद्वानों की दृष्टि में क्षेत्रावलोकन	४६
११	समालोचन	५२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

ऋषभ - वन्दना

सद्धर्म-सेतुसरणोंप्रतिपालनार्थ
नाभेर्निकेतनमलंकृतवांजिनेन्द्रः ।
इन्द्रादिदेवविबुधैरभिषिक्तशीर्षो
मोक्षाप्रदोविजयतेऋषभादिदेवः ॥१॥

- चौपाई -

बंदउँ प्रभु-पद भव—भयहारी ।
पुनि—मन—मनि सब विधि सुखकारी ॥
जग—भूषन जिन—धर्म—प्रकासी ।
जगदाधार विमल—गुन—रासी। ।१॥

सुर सुरपति गावहिं प्रभुताई ।
गुरु गनधर ध्यावहिं अधिकाई ॥
निरखहिं निज उर सम्यकज्ञानी ।
करत प्रनाम पापनिधि हानी ॥२॥

अस चरनाम्बुज जनि उपकारी ।
पुनि बंदउँ मन—ध्यान सम्हारी ॥
धरी उर भगति सहित गुनगाना ।
वरनउं यह इतिहास सुहाना ॥३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथाय नमः ॥
श्री केशरियाजी ऋषभदेव तीर्थ का

—: प्रमाणित इतिहास :—

—१—

श्री केशरिया जी : एक परिचय

अनन्तगुण सागरंशिवमनन्तमध्याकृतम् ।
अनन्तभवभन्जनंचिदमनन्तज्ञानप्रदम् ।
सुरासुरपदार्चितप्रणतपारिजातद्रम ।
नमामिकरुणाकरंऋषभमाद्यतीर्थकरम् ॥१॥

भारत प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र श्री केशरियाजी (ऋषभदेव) को कौन नहीं जानता ? युगादि जिन प्रथम तीर्थङ्कर भगवान ऋषभदेव के मंगलमय अतिशय से धुलेव ग्राम की भूमि को प्रसिद्धि प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यदि हम इस तीर्थ का ऐतिहासिक सिंहावलोकन करें तो ज्ञात होगा कि मूल-नायक भ० ऋषभदेव की चित्ताकर्षक वीतराग प्रतिमा अतिव-प्राचीन हैं । डॉ० कामताप्रसादजी जैन के मतानुसार "यहां से एक मील दूर भगवान की चरणपादुकाएं हैं । वहीं से धुलिया भील के स्वप्न के अनुसार यह प्रतिमा जमीन से निकली थी। धुलिया भील के नाम के कारण यह गांव धुलेव कहलाता हैं" ।

अपनी प्राचीन शिल्पकला से सुसज्जित विशाल मन्दिर भ० केशरियाजी के दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों का मन मुग्ध कर लेता है । इसका कब निर्माण हुआ ? इस विषय में प्राप्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रमाणों के आधार पर यह मन्दिर दूसरी शताब्दी में कच्ची ईटों का बना था। अथानन्तर आठवी शताब्दी में पारेवा नामक पत्थरों से बना और पश्चात् सं. १४३१ में पुख्ता पत्थर का बनवाया गया इसका प्रमाण मन्दिर के खेला मण्डप में (उत्तरी दीवार में) लगे सबसे प्राचीन शिलालेख से जीर्णोद्धार होना स्पष्ट है। जो कि इस प्रकार है :—

'श्री आदिनाथ प्रणम्य लोक आश्वासिता केचन बित कार्याडन मोक्ष मार्गे तमादि-नार्थं प्रणमादि नित्य-मादित्य सं. १४३१ वर्षे वैशाख सुदी अक्षय तिथौ बुध दिनाः गुरावद्देहा वापी कूप प्रसरि सरोवरालं कृत पत्तने राज्य श्री विजयराज्य पालय-न्ति सति उदयराज सेलया श्री मज्जिने-न्द्राराधन तत्पर पंचूली वागड प्रति यात्रा श्री काष्ठासंघ भट्टारक श्री धर्मकीर्ति गुरोपदेशेन बाये साध बीजासुत हरदास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्याम् श्री ऋषभेश्वर प्रासादस्य जिर्णो-द्धार श्री नाभिराजवरवंश कृतावतार कल्पद्रूमा.... .... माहु सेवनेषु ...."

उक्त लेख से यह प्रमाणित होता हैं कि गर्भगृह शिखर तथा खेल मंडप विक्रम सवत् १४३१ में काष्ठासंघो भट्टारक धर्मकिर्ति के उपदेश से शाहु हरदास और उनके पुत्र पुंजा तथा किता ने जोर्णोद्धार कराया। इससे स्पष्ठ हे कि सं० १४ ३१ के पुव भी पुराना मदिर था।

मन्दिर को नोचोकि तथा सभा मण्डप का निर्माण सं. १५७२ में दि० काष्ठासंघो बाच जाति के काश्यप गोत्रो कंडिया 'कोहिया' और उसकी धमपत्नी भमरी के पुत्र 'हिसा' ने लगभग ८०० टका (उस समय को प्रचलित मुद्रा) व्यय करके बनवाया था। यह प्रमाण खेला मण्डप की दक्षिणो दोवाल में लगे शिलालेख से स्पष्ट हैं। बावन जिनालयो का निर्माण उतरोतर हुआ हैं। क्योंकि जिनालयों की प्रतिमाएं वि० स० १६११ से १८८३ तक की है। मन्दिर का किलेनुमा कोट और सिंहद्वार मुल संघ के कमलेश्वर गोत्रीय गांधी श्री विजयचद जातो दिगम्बर जैन निवासी सागवाड़ा ने वि० सं० १८६३ में बनवाया था। इस प्रकार श्री केशरिया जी का विशाल मन्दिर वि० सं० १४३१ में जीर्णोद्वार होकर १८८९ तक बनता रहा। यदि जीर्णोद्वार के पूर्व ६०२ वर्ष पहले का पुराना मन्दिर मानले तो भी यह तीर्थ प्राप्त प्रमाणों के आधार पर १२०० वर्ष पुराना अवश्य होना चाहिये।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ० ऋषभदेव की प्रतिमा के प्रकट होने पर इस क्षेत्र का अतिशय बढ़ने लगा और इसी अतिशय के कारण जिन मन्दिर का निर्माण हुआ। मूल मन्दिर दिगम्बर जैन ही है तथापि श्री केशरियाजी के अतिशय (चमत्कार) से सार्वजनिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व है। तभी तो ओझाजी कहते हैं—हिन्दुस्तान भर में यही एक ऐसा मन्दिर हैं जहाँ दिगम्बर तथा श्वेताम्बर जैन वैष्णव, शैव, भील एवम् तमाम सशूद्र स्नान कर समान रुप से मुर्ति का पूजन करते हैं।"

तीर्थ के परम वीतराग—निर्ग्रन्थ—मूलनायक की पद्-मासन विराजमान प्रतिमाजी पर अत्यधिक केशर चढ़ाने से भ०ऋषभदेव को केशरियाजी या केशरियानाथ भी कहते हैं और धुलेव नगर भी केशरियाजी की संज्ञा से प्रसिद्ध हैं। इस पावन भूमि पर प्रतिवर्ष सहस्त्रों नरनारी आकर हृदयहारी प्रतिमा के दर्शन कर अपने को धन्य मानते हैं।

ऋषभदेव का पुराना नाम धुलेव है। प्रारम्भ में धुलेव ग्राम के खडक प्रान्त के "जवास पट्ट" में था। जवास-राव ने जब इसे श्री केशरियाजी को भेट कर दिया तब ग्राम कि व्यवस्था दि० काष्ठासंघ के भट्टारकों द्वारा होने लगी। तदुपरान्त बहुत समय के बाद औ० ब्राह्मणों को अवसर मिला और फिर किसी विशेष कारण से तिथ की देखभाल वि० स० १९३४ के लग-भग उदयपुर के महाराणा द्वारा होने लगी श्रीं केशरिआजी का मन्दिर(तीर्थ) "सेल्फ सपोर्टिंग" माना गया हैं। इस समय का तीथ का संरक्षण राजस्थान सरकार के अन्तर्गत देवस्थान विभाग द्वारा एक ट्रस्टी के रुप में हो रहा है। यह ट्रस्ट जैन समाज के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋषभदेव-तीर्थ भारत के पश्चिम भाग में स्थित राजस्थान प्रान्त दक्षिण भाग में उदयपुर से ६५ की.मो. दुर एक पहाड़ो पर जो "कुमारिका" या "कोयल" नदो से वेष्ठित शुशोभित हो रहा है, गांव का विकास मन्दिर जी के आगे हुआ है। अतः ऐसा प्रतोत होता है मानो तीर्थ की वन्दना कर रहा हो इस तीर्थ भूमि पर यात्रियों को सुविधार्थ तीन धर्मशालाए बनो हुई हैं। यातायात, राशनी, जल आदि का समुचित प्रबन्ध हैं। बिजली, तार–टेलीफोन, नल, प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, उच्च विद्यालय, छात्राश्रम, विश्व जैन मिशन केन्द्र, पुलिस थाना, विकास पंचायत आदि होने से यह गांव एक सुन्दर कस्बा बन गया है। यहां पगल्याजो, चन्द्रगिरि, सूरज कुण्ड, भीम पगल्याजी, कोयल घाट, यश किर्ति भवन आदि स्थान दर्शनोय है।

यह तीर्थ अपने चमत्कारों के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है। दर्शनार्थ आने वाले यात्रियो की मान्यता रही है कि भगवान की "मानता" लेने से कार्य सिद्ध होते है। चैत्र कृष्णा अष्टमी व नवमी को भगवान ऋषभनाथ के जन्म दिवस पर मेले का आयोजन होता हैं तब सहस्त्रों नरनारी यहां आकर भगवान के दर्शन का लाभ लेते हैं। यह तीर्थ दिगम्बर जैन होते हुए भी सर्व मान्य रहा है, यह अन्यतम विशेषता है। विस्तृत वर्णन पृथक से आगे के अध्यायों में करेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—६—

—२—

तीर्थ के मुलनायक भगवान ऋषभदेव की

मनोज्ञ प्रतिमा

आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव सातिशय चित्ताकर्षक परम वीतराग दि० प्रतिमा अतीव प्राचीन है। प्रतिमा जी पर किसी भी प्रकार का लेख या चिह्न नही है, हो सकता है यह प्रतिमा उस प्राचीन काल की हो, जबकि लोगो में शिलालेख लिखने का रिवाज नही था। यह भी हो सकता है, लेख अब तक मिट गया हो। प्रतिमाजी की प्रचीनता का पता ध्यान पूर्वक देखने से समझ में आ सकता है, लेख मिट जाना तो स्वभाविक है किन्तु प्रायः अति प्राचीन प्रतिमाओं के लेख नही मिलते। कुछ भी हो प्रतिमा के विषय में तीर्थ के सभी इतिहासकारों ने स्वीकार किया है कि अतीव प्राचीन है।

भ० ऋषभदेव की मान्यता [मूर्ति–पूजा के रुप में भी] बहुत प्राचीन काल से हैं। भारत में ही नहीं वरन विदेशों में भी प्रचीन मूर्तियां मिली है। मिश्र में दस हजार वर्ष पुरानी ऋषभदेव की मूर्ति मिली हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कतिपय ऐसे प्रमाण उपलब्ध है जिनके आधार पर यह निश्चय होता है कि यह प्रतिमा चतुर्थ काल की है। इस क्षेत्र पर भूगर्भ से यह प्रतिमाजी के प्रकट होने पर ही तीर्थ का उत्तरोत्तर अतिशय बढा और शनैः शनैः इतने विशाल जिनालय का निर्माण हुआ। प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यह तीर्थ लगभग १२०० वर्ष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुराना होना अनुमान करते हैं । इससे स्पष्ट है कि प्रतिमाजी इससे भी अतीव प्राचीन है ।

प्रतिमाजी की प्राचीनता के विषय में तो सभी एक मत है किन्तु इस क्षेत्र पर प्रकट होने के अनेक मनगड़न्त प्रमाण मिलते हैं जो कि इतिहास की पृष्ट भूमि पर सत्य प्रमाणित नहीं होते । जैसे कि :—

(१) लंका से श्री रामचन्द्र जो द्वारा भ० ऋषभदेव (केश०) को प्रतिमा अयोध्या लाना और फिर उज्जैन पश्चात डूंगरपुर राज्यातर्गत बडौदा गामको प्राप्त होना अनन्तर देवप्रयोग से धुलेवके नजदोक 'पगला' की जमीन में बिराजमान रहना और फिर प्रकट होना आदि ।

(२) प्रतिमाजी को ब्राह्मण लाया, लपसी (सीरे) में रखी आदि–आदि ।

भली प्रकार विचार करने से यह प्रमाण ही सत्य प्रतीत होता है कि चांदनपुर महावोर एवम् बाड़ा पद्मप्रभू की भांति भगवान ऋषभ स्वामी की यह प्रतिमा भी धुलिया भील द्वारा अपनी गाय के दूध झरने के द्रश्य को देखकर उसके स्वप्नानुसार भूगर्भ से प्रकट हुई है जैसा कि इस विषय में बाबू कामताप्रसादजी ने जैन तीर्थ और उनकी यात्रा पुस्तक के पृष्ठ १११ पर ठीक ही लिखा है :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यहां से एक मील दूर भगवान की चरण पादुकाएं है । वहां से धुलिया भील के स्वपन अनुसार यह प्रतिमा जमीन से निकली थी । धुलिया भील के नाम के कारण यह गांव धुलेव कहलाता है ।

बाबूजी का यह मत प्राप्त प्रमाणों में विशेष मान्य है सत्य है । गाय के दुध झरने का कथन भी सत्य माना जा सकता है । प्रतिमाजो के प्रकट होने के उपरांत सातिशय चित्ताकर्षक देखकर छोटे से जिनालय में विराजमान की और बाद में भट्टारकों के उपदेश दानी श्रावकों ने क्रम से इतने बड़े मन्दिर का निर्माण कराया है । ऐसा प्राप्त शिलालेखों से प्रमाणित होता है। प्रतिमाजी की अतीव प्राचीनता के विषय में सभी इतिहासकार सहमत है, इसमें कोई सन्देह नहीं ।

इस समय मन्दिर में बिराजमान प्रतिमा

निज मन्दिर में आदि ब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की सातिशय चतुर्थकालीन दि० प्रतिमाजी लगभग १ फुट ऊंचे पावासण पर विराजमान हैं जिसमें नीचे ही मध्यभाग में दो बैलो के बीच देवो तथा उस पर हाथी, सिंह, देव आदि सर्व धातु के बने हुए हैं। उस पर १६ स्वपन अङ्कित किये हुए है, जिनके ऊपर छोटे २ नव जिन प्रतिमाएजी है जिन्हें इस समय लोग नवदेव कहते हैं। मूलनायक के आजु बाजु तथा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपरी भाग में सर्व धातु का अन्य तेईस तीर्थङ्करों की प्रतिमाएं सहित भव्य सिंहासन है। इस प्रकार परिकर में एक साथ चौबास तीर्थङ्करों क दर्शन होते हैं। भ० आदिनाथ के दोनों ओर खड्गासन लगाये दो तीर्थङ्करों का प्रतिमाओं के परम वातरोग निर्ग्रन्थ(दिगम्बर) अवस्था में दर्शन होते है सबके मध्य श्यामवर्ण पद्मासन लगभग तीन फोट उतंग भ० ऋषभदेव के उपर तीन छत्र(एक साथ जुडे हुए)तान लोकों का स्वामोपना प्रकट करते हैं। प्रभु के पोछे प्रखर तेजस्वी सभामण्डप सुशोभित होता है। दानों दिशाओं में एक-एक अखण्ड ज्याति के प्रकाश में अनुपम ज्योति स्वरुप अरहत अवस्था में धर्म सभा के मध्य विराजमान से जगत पूज्य ऋषभ स्वामो के मनोहर दर्शन होते हैं।

सिंहासन को छोड़कर सारा गर्भगृह तथा गर्भगृह का द्वार चांदी से मढ़ा हुंआ है अत्यन्त मनोहर गर्भगृह में भ० ऋषभनाथ का रुप देखते ही बनता है। प्रतिमाजी पर अत्यधिक केशर चढ़ने से भ० ऋषभदेव को केशरिया या 'केशरियानाथजो' भो कहते है और अब तो धुलेव नगरी भो केशरियाजी से सम्बन्धित की जाती है। प्रतिमाजी काले पाषाण की होने से आदिवासो भील भाई इन्हे 'काराजो' 'केशरिया बाबा' कहते हैं कुछ लोग तो भक्तिवशात् "धुलेवा धणो" और "केशरियालाल के नाम से जयध्वनि करते हैं। इस प्रकार अनेक व्यक्ति कई प्रकार से भनवाग कौ भक्ति कर आन्नद का अनुभव करते हैं प्रतिमाजी का अतिशय अथवा तोर्थ के चमत्कार का वर्णन आगे करेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—६—

तीर्थ का सुन्दर विशाल मन्दिर

अपनी प्राचीन शिल्प कलासे सुसज्जित विशाल मन्दिर भ० केशरियाजी के दर्शनार्थ आने वाले मनुष्यों का मन मुग्ध कर लेता है। आदि ब्रह्मा भ० ऋषभदेव के अतिशय से ही इस मन्दिर ने साधारण जिनालय से विशाल रमणीय मन्दिर का रुप पाया है। अपनी प्रारम्भिक अवस्था में यह मन्दिर केसा था? इस विषय में जैन प्रभात मासिक वीर सं० २४४१ अंक ८ पृष्ठ ४०५ पर वर्णन हैं कि शिलालेखों से पता चलता हैं कि यह मन्दिर संवत् २ (दूसरी शताब्दी) में कच्ची ईटों का बना था। बाद आठवीं शताब्दी में पारेवा नाम के पत्थर का बना और पश्चात् सं० १४३१ में पुख्ता पत्थर का बनवाया गया आदि। किन्तु दूसरी शताब्दी में मन्दिर होने का कोई शिलालेख प्राप्त नहीं हुआ है। तथापि मन्दिर के खेला मण्डप में सबसे प्राचीन वि० सं० १४३१ का शिलालेख लगा हुआ है जिसमें मन्दिर का जीर्णोद्धार का स्पष्ट वर्णन है। जिससे यह प्रमाणित होता है कि स० १४३१ के पूर्व भी पुराना मन्दिर था। कहा जाता है की भगबान की प्रतिमा इस क्षेत्र पर प्रकट होने पर सर्व प्रथम ईटों का मन्दिर बनबाया गया था तत्पश्चात उस जिनालय के टूट जाने पर जीर्णोद्धार रुप पाषाण का यह नया मन्दिर भिन्न-२ विभागों से अलग-२ समय में बनकर तैयार हुआ है। इसके प्रमाण में खेला मण्डप का दूसरा शिलालेख तथा प्रतिमाओं पर लिखे गये लेखों से वर्णन मिलता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निज मन्दिर में जगत पूज्य परम दिगम्बर भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा विराजमान हैं उस गर्भगृह के ऊपर विशाल शिखर है। गर्भगृह के बाहर खेलामण्डप की दिवालों मे आमने सामने दो शिलालेख है। जिनमें बाई तरफ सं० १४३१ का एक लेख अङ्कित है वह इस प्रकार है :—

"श्री आदिनाथ प्रणम्य लोक आश्वासिता केचन बित कार्याडन मोक्ष मार्गे तमादिनार्थ प्रणमादि नित्यमादित्य सं० १४३१ वर्षे वैशाख सुदी अक्षय तिथौ बुध दिनाः गुरावद्देहा वापी कुप प्रसरि सरोवरालंकृत खेडवाला पत्तने राज्य श्री विजय राज्य पालयन्ति सति उदयराज सेलया श्री मज्जिनेन्द्राराधन तत्पर पंचूली वागड़ प्रतियात्रा श्री काष्ठासंघे भट्टारक श्री धर्मकिर्ति गुरोपदेशेन वाये साध वीजासुत हरदास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भार्या हारू तदपत्योः सः पुंजा कोताभ्याम् श्री ऋषभेश्वर प्रासादस्य जीर्णोद्धार श्री नाभिरांजवरवंश कृतावतार कल्पद्रुमा.....माह सेवनेषु.....,,

उक्त लेख से प्रमाणित होता है कि गर्भगृह शिखर तथा खेला मण्डप विक्रम सं० १४३१ में काष्ठासंघो भट्टारक धर्मकीर्ति के उपदेश से शाह हरदास एवं उसके पुत्र पुंजा तथा कोता ने जिर्णोद्धार कराया। इससे यह भी स्पष्ट सिद्ध होता है कि सं० १४३१ के पहले पूराना मन्दिर या जिनालय अवश्य था। यदि जिर्णोद्धार से पूर्व ६०० वर्ष पहले का पूराना मंदिर मान ले तो यह तीर्थ १२०० वर्ष पुराना तो अवश्य होना चाहिये।

खेला मण्डप में उत्तर दिशा में दाई ओर लगे दूसरे शिलालेख से मंदिर को नौचौको तथा सभा मण्डप के निर्माण होने का प्रमाण मिलता जो कि इस प्रकार है।

"लोका आश्वासितां केचन.....आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदी ५ वार सोमे भट्टारक श्री यशकिर्ति राज्ये श्री कला भार्या सोनबाई बिजिराज इदा.....धुलीय ग्रामे श्री ऋषभनाथ प्रणम्यः कांडया कोहिया भार्या भरमी तस्य पुत्र हीसा भार्या हिलसदे तस्य पुत्र कान्हा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवरा रंगा भ्रात वेणदास भार्या लाछो भ्रात साबा भार्या पांचो सुत नाथा नरपाल श्री काष्ठासंघे वाच न्याते काश्यप गौत्रे कडिया हिसा मण्डप: नव चौकियग्रों सनौ बड़ पुत्तला सहस टंका सी ८०० इटड़ो कय्य: श्री ऋषभजो श्री नाभिराज कुल पुज:

उक्त लेख से यह प्रमाणित होता है कि खेला मण्डप से बाहर आने पर नोचौकी तथा सभा मण्डप विक्रम सवत् १५७२ में काष्ठासंघी वाच जाति के काश्यप गोत्रा कडिया कौहिया और उसकी पत्नी, भरमी, के पुत्र होसा ने लगभग ८०० टंका (उस समय को प्रचलित मुद्रा) खर्च करके बनवाये थे ।

इन दोनों शिलालेखों से यह स्पष्ट प्रमाण मिलता है की गर्भगृह तथा उसके आगे का खेला मण्डप (निज मन्दिर) वि० सं० १४३१ में और नौचौकि तथा सभा मण्डप १५७२ में बने हैं । खेला मण्डप में इस समय २३ जिन प्रतिमाएं विराजमान हैं । उत्तर दक्षिण दिशा में लिखे हुए शिलालेखों के नीचे सिंहासन सहित श्यामवर्ण की जो जिन प्रतिमाएं विराजमान हैं, उन्हे "पंच परमेष्ठी" कहते हैं । 'पच परमेष्ठी,' के मुलनायक के दोनों ओर खड़ी मूर्तियां दिगम्बरत्व की द्योतक दर्शनोय है । मण्डप पर गुम्बज बना हुआ है नौचौकी मण्डप के मध्य भाग में १।। फिट ऊंची वेदी बनी हुई । उसके दक्षिण स्तम्भ पर श्री क्षेत्रपालजी की मुर्ति है तथा पास ही देश दिग्पालों का स्तम्भ हैं ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूल जिनालय के प्रथम प्रवेशद्वार पर भ. पार्श्वनाथ की प्रतिमा है।

नौचोका के सामने सभा मण्डप है जिसमें छोटो सी वेदो बनो हुई है जिस पर मण्डप को रचना कर पूजन आदि पढ़ते हैं। रात्रि के समय मुख्य-२ प्रसंगों पर विशेष प्रकार की सजावट जमाकर भक्त लोग गाते हैं। मण्डप के दक्षिण भाग में "श्रीमद्भागवत" लिखा हुआ एक आसन का चबूतरा हैं। वि० सवत् १९६९ के पहले यह स्थान माथुर सघी दि० भट्टारकों के शास्त्र पढ़ने को गद्दी के रुप में था। तत्पश्चात मान्दर के हाकिम श्री तख्तसिहजा ने मरम्मत कराने के बहाने भाद्र मास की एक ही रात में उस प्रकार का परिवर्तन कर दिया है।

निज मन्दिर के चारों ओर ५२ जिनालय है। जिनमें सभी निग्रन्थ वातराग जिन प्रतिमाएं विराजमान हैं इन जिनालयो के मध्य में ऊत्तर, दक्षिण और पश्चिम में एक-२ मण्डप सहित मन्दिर बना है, जिन पर सुन्दर शिखर बने हुए हैं। जिनमें केशयूक्त ध्यानस्था भ० आदिनाथ की मूल मूर्तियां विराजमान हैं। इन सब जिनालयों में फिर कर दर्शन-स्तबन करते हुए निज मन्दिर की परिक्रमा भी हो जाता है। इन्ही जिनालयों में पश्चिम की पक्ति में श्याम पाषाण का ६ फुट से ऊँचा एक स्तमभ है जिस पर १००० जिन प्रतिमाएं विद्यमान है। अतः इसे सहस्त्रकूट चैत्यालय कहते हैं। पूर्व में निज मन्दिर के सामने ठीक बीचोबीच एक मध्यम कद का हाथी है जिस पर

सं. १७११ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे श्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंद कुंद भट्टारक···गुरुपदेशात्··· लेख अङ्कित है। हाथो पर एक गुम्बद बना हुआ है। हाथी के दोनों ओर चरणपादुकाएँ स्थापित है, जिसके नाचे चमर धारी इन्द्र खडे हैं।

जिनालयों का निर्माण निज मन्दिर के बाद थोडा २ उत्तरोत्तर हुआ है। बावन जिनालय की प्रतिमाएँ विक्रम स. १६११ से लगाकर १८८३ तक की हैं। प्रातमा लेखों से ज्ञात होता है ये जिनालय वि० स० १६११ के पूव ही बनने प्रारम्भ हा गये थे। प्रतिमाओं पर लिखे गये लेख में से कुछ निम्न प्रकार है :—

(१) दक्षिण के मण्डप सहित मन्दिर के पास बाई ओर प्रथम जिनालय में भगवान आनिनाथ का प्रातमा विराजमान है। जिस पर लिखा है :—

श्री काष्ठासंघे आदिनाथ प्रतिमा सं० १७५४ वर्षे पोस मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथो बुध वासरेधुलेव ग्रामे श्री काष्ठासंघे नदी तट गच्छेविद्यागणे भट्टारक श्री राम सेनान्वये तदनुक्रमेण भ० राजकीर्ति तत्पट्टे भ० लक्ष्मी सेनतत्पट्टे भ० इंदुभूषण तत्पट्टे भ० सुरेन्द्रकीर्ति उपदे—शात् प्रतिष्ठितं। हुबड़ जाति बड शाखायां विश्वेश्वरे गोत्रे···।"

यही लेख उसी जिनालय को दोवाल पर लगी हुई पाटो पर भी अङ्कित है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२) पश्चिम में सहस्त्रकूट चैत्यालय के पास जिनालय में भ० शान्तिनाथ की प्रतिमाजी पर निम्न लेख अङ्कित है :—

"संवत् १७६६ ना चैत्र वदी ५ वार चन्द्रे श्रीमत् काष्ठासंघे नदी तट गच्छ विद्यागणे भट्टारक श्रीराम सेनान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री राजकीर्ति तदनुक्रमेण भ० श्री सुमतीकीर्ति तत् अनुक्रमेण हबर न्यातीत बुध गोत्र संघवी श्री रामजी भार्या सिद्धरदेधर्मार्थ श्रीशान्तिनाथ बिबं आचार्य श्री प्रताप कीर्ति स्वहस्तेन प्रतिष्ठापित ।। श्री ।।

(३) पश्चिम में मण्डप सहित मन्दिर के पास भगवान वासु पूज्य की प्रतिमा पर लिखा है :—

" संवत् १७६८ वर्षे मगसीर मासे विद्यागणे कून्द-कुन्दाचार्यान्वयं भट्टारक श्री सकल कीर्ति स्तदन्वये भट्टारक श्री क्षेम कीर्ति तत्पपट्टे भ० नरेन्द्र कीर्ति गूरुपदेशात सुरत वासी गाम मह आवाँ सिलाज्ञाति साहा दादा मनजी श्रीवासुपूज्य नित्य प्रणमति ।।१।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४) दक्षिण दिशा के जिनालयों में खण्डित प्रतिमा (जिसका एक पांव खण्डित है) पर १६११ वर्षे श्री मूलसंघे तथा उत्तर के जिनालयों में प्रतिमा पर "संब त्१६१२ वर्षे मूलसंघे' लिखा है

इन लेखो से यह प्रमाणित होता हैं कि भ० कुन्द कुन्दाचार्य के अनुयायो मूलसघी एवं रामसेनाचाय के काष्ठासघो भट्टारकों द्वारा श्रद्धालु श्रावकों ने समय–२ पर प्रतिमाएं प्रतिष्ठत करा कर जिनालयों में विराजमान कराई थो। दक्षिण के जिनालयों के मध्य में मण्डप सहित जो मन्दिर हैं, उसके द्वार के समीप दीवाल में लगे हुए शिलालेख से ज्ञात होता हैं कि दिगम्बर काष्टासंघ के नदी तट गच्छ विद्यागण के भट्टारक श्री सूरेन्द्र कीर्ति के समय में बगेरवाला जाति के गोबाल गोत्री संघवी आल्हा के सुपुत्र भोज के कुटुम्बियों ने यह मन्दिर बनाकर प्रतिष्ठा महोत्सव किया।

इस मन्दिर के पास एक कोठरी है जिसमें उपकरण रखे जाते है किसो समय भट्टारकजो के रहने के उपयोग में आता थो। उसके सामने मण्डप में भट्टारक को गादो है जिस पर अब भी भट्टारक बैठ कर शास्त्र पढते हैं। तथा काच का एक लघु चत्यालय भी दि० जैन समाज का उस पर रक्खा हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि दिगम्बर जैन भट्टारकों ने इस विशाल मन्दिर के निर्माण का कार्य कराया है और येही वास्तविक संरक्षक रहे थे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उन्हीं के उपदेशों से मन्दिर के अलग २ विभाग समय २ पर बने थे। उत्तर के जिनालयों के मध्य में जो मन्दिर है। वहां भी मूलसंघ भट्टारकों की गादी बनी हुई है। ऐसा ज्ञात होता है कि मन्दिर का उत्तरी भाग मूलसंघी तथा दक्षिणी भाग काष्ठासंघी भट्टारकों के अधिकार में था। इस समय उत्तर के मन्दिर के अग्रभाग में एक और केशर घिसने के 'ओरसियां' बने हुए है, जिनमें काफी केशर घिसी जाती है। दूसरी ओर आगे पर मन्दिरजी का प्राचीन भंडार है। मुख्य मन्दिर से दस सीढ़ियां उतरने पर दो ताकों में विराजमान पद्मावतीदेवी और चक्रेश्वरी देवी के दर्शन होते है। प्रवेश द्वार से बाहर आने पर काले पत्थर के दोनों ओर खडे दो हाथी दिखाई देते है।

समस्त जिनालयों को घेरता हुआ जो मन्दिर का बाहरी भाग है, यद्यपि साधरण पत्थर का है तथापि वह भूमि से लेकर शिखरों तक अधिकांश स्थानों पर कूरा हुआ है और उसमें स्थान २ पर सुन्दरता पूर्वक जिन प्रतिमाएं (खड्गासन) निर्मित है जो छोटे २ टोकों के मध्य विराजमान है चारों दिशाओं में उतंग चार शिखर तथा छोटे २ अनेक शिखर हैं। मध्य शिखर, जो कि मूलनायक पर बना है ध्वजा सहित मन्दिर की शोभा बढाता है। मूल मन्दिर के आगे तीन खण्ड का प्रवेश द्वार शिल्प कला से सजा हुआ है। समूचा भवन स्थापत्य कला का एक सुन्दर नमूना है। परिक्रमार्थ नीचे पत्थर जडे हुए है। इस परिक्रमार्थ को वेष्ठित करती हुई और भी इमारते बनी हुई हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दक्षिण की ओर सामने हो एक तरफ स्नानघर जाने के मार्ग में भ० पार्श्वनाथजी का मन्दिर है, जिसकी प्रतिष्ठा १८०१ में हुई थी उसमें मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की लगभग ४ फोट उतंग पद्मासन विराजमान सुन्दर श्याम वर्ण पाषाण की प्रतिमा है। प्रतिमा पर सहस्त्रफण फैलाये धरणेन्द्रदेव नाग रुप में छत छाया किये हुए हैं अतः इस प्रतिमा को,, सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ कहते हैं। मन्दिर में रंगीन टाईलें जड़ी हुई हैं। (भ० पार्श्वनाथ के मन्दिर में ध्यानस्त दि० सप्तऋषियों की प्रतिमा दर्शनीय है) उसके आगे स्नान घर की तरफ जाने का मार्ग है मार्ग में विश्राम स्थलऔर फिर आगे कूप उसी के पास भक्तजनो के स्नान करने का स्थान है। मुल मन्दिर के ठीक पीछे कोट में एक द्वार बना है उसमें से महाराणा सा० प्रवेश कर फीर एक छोटे द्वार में होकर दर्शनार्थ आते थे। उसके आगे जाने पर मन्दिर के उत्तरी भाग में मन्दिर के निरीक्षक एवम अन्य कर्मचारियों के कार्यालय बने है। ये कार्यालय १८७३ में कोट बनने के पश्चात बनाये गये है। इसके आगे एक ओर एक कोठरी हैं जिसमें मेला आदि अवसरों पर काम आने वाला सामान रहता है

मन्दिर के चारों ओर पक्का कोट बना हुआ है। उत्तर दिशा में कोट के अन्दर लगे हुए शिलालेख से ज्ञात होता है की मुलसंघ के बलात्कारगण के कमलेश्वर गोत्रीय गांधी श्रीविजयचन्द सागवाड़ा जाति दिगम्बर जैन ने वि० सं० १८६३ में बनवाया था।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री केशरियाजी के मन्दिर का मुख्य द्वार तीन खण्डो वाला है मानों यह बता रहा है कि भ० ऋषभदेव तीनों लोकों के स्वामी है । द्वार के दोनों ओर एक–एक छतरी स्वर्ण कलशों से सुसज्जित बनी हुई है । द्वार के प्रवेश करने पर दोनों ओर एक–एक पाषाण का हाथी खड़ा दिखाई देता है द्वार पर नौबतखाना बना है, जो कि कोट के साथ ही जुडा हुआ है । इसका निर्माण भी १८६३ में हो गया था।

—: निष्कर्ष के रुप में :—

केशरियाजी का विशाल दिगम्बर जैन मन्दिर वि० सं० १४३१ में जीर्णोद्धत होकर १८८६ तक बनता रहा इसके पूर्व ईटों का साधारण जिनालय था, जिसे जीर्णोद्धार के पूर्व ५०० वर्ष से कुछ अधिक प्राचीन मानलें तो यह मन्दिर १२०० वर्ष पुराना प्रमाणित होता है ।

यह मन्दिर वैज्ञानिक ढंग में उत्तम कलाकारों द्वारा निर्मित हुआ है । पूर्व दिशा में उदय होते हुए भगवान भास्कर (सूर्य) की देदीप्यमान किरणें मूलनायक श्री ऋषभदेव के चरण कमलों की वन्दना करती जान पड़ती हैं । प्रातः सूर्य देव अपने स्वामी के दर्शन कर दिन का कार्यक्रम प्रारम्भ करता है । यह मन्दिर इस प्रकार का बना है कि नीचे प्रथम द्वार के बाहर से ही दर्शन होते हैं । इस प्रकार जो व्यक्ति नीचे से ही दर्शन करना चाहें, वे तीर्थ के अधिपति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री केशरियाजी के सुखप्रद दर्शन का लाभ ले सकते है । भ० ऋषभदेव के अतिशय की कीर्ति को चिरस्थाई रखने को प्रतिष्ठाचार्यो ने मूलनायक सहित चारों दिशाओं में भ० आदिनाथ की ही मूल प्रतिमाएं विराजमान की हैं । सभी प्रतिमाएं केशर युक्त ध्यानस्थ हैं । यह तीर्थ की एक विशेषता है वैसे भ० ऋषभनाथ को जहां भी मूर्तियां मिली हैं वे सब जटा-जुट युक्त केशो ही चित्रित है । ये तीनों मुर्तियां भी ऐसी ही है जिनके कन्धों पर जटाये लहराती निखाउ गई हैं । क्योंकि प्राचीनकाल में ऋषभदेव की मूर्तियां जटायें सहित ही बनाई जाती थी । मूलनायक भगवान केशरियाजी की प्रतिमा पर भी लहराते केश दिखाई देते है किन्तु अतीव प्राचीन होने से कुछ मिट से गये हैं भगवान ऋषभ की सातिशय प्रतिमा नीस्सन्देह दिगम्बर जैन ही हैं जोकि ध्यान की प्रेरणा देती हुई दर्शकों का चित्त अनायास आकर्षित करती है ।

अखिल भारत में एक ऐसा मन्दिर है जिनका समता में कोई भी मन्दिर नहीं है जो कि अपने ढग का निराला ही है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—२५—

—४—

धुलेव ग्राम का अभ्युदय

युगादि जिन भगवान ऋषभदेव की अति मनोज्ञ प्रतिमाजी के प्रकट होने पर एक छोटा सा पाल खेडा में साधारण जिनालय बनवाया गया। बाग में अतिशय के प्रभाव से विशाल मन्दिर का क्रम-क्रम शनैः-शनैः निर्माण हुआ। अतः धुलाया गमेतो के नाम की बस्ती का नाम धुलेव पडा। वह बस्ती उत्तरोत्तर बढने लगी और बढते २ एक सुन्दर गांव बन गया। प्रारम्भ में यह बस्ती मन्दिरजी के उत्तर पश्चिम में थी तीर्थ के चमत्कारों से यात्रीगण आने लगे। तब बस्ती का मन्दिर के आगे विकास होने लगा। इस समय जो सूरज-पोल का दरवाजा है, वह बस्ती के शहर कोट का अन्तिम दरवाजा था। होली चौक जहां यशकीर्ति भवन बना हुआ है, उस समय गांव का श्मशान माना जाता था। काल क्रम से भगवान ऋषभदेव के तीर्थ का चमत्कार विशेषतः बढने लगा। अतः आसपास के गांवों के महाजन और ब्राह्मण आदि लोग आकर इस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावन भूमी पर बसने लगे । धुलेव ग्राम का विकास सूरजपोल द्वार से बाहर बड़ने लगा । और एक अच्छे से गॉव के रुप में दिखाई देने लगा ।

गॉव का विकास 'कोयल' या कुँवारिका नदी है वेष्ठित ऊँची पहाडी पर हुआ है । दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों के लिये मन्दिर के पास में एक धर्मशाला बनवाई गई जिसे आजकल "जूना नोहरा" कहते है । गांव के विकास के साथ–२ दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों में से दानी सज्जनों ने धर्मशाला के विस्तार में योग दिया । फल स्वरुप तीन चार धर्मशालाएँ बन गई । आज इन धर्मशाओं में यात्रियों के लिये सब प्रकार की सुविधाएँ बनी हुई हैं । आज तीर्थ की प्रगती होने से धुलेव गांव ने एक छोटे से कस्बे का रुप धारण किया । भगवान ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ होने से गांव का नाम ऋषभदेव प्रसिद्ध हुआ । पोस्ट आंफिस में (रखबदेव) कहा जाता है । भगवान की प्रतिमा पर अधिक केशर चढने से बाद में गांब का नाम केशरियाजी भी कहा जाने लगा ।आजकल धुलेव ग्राम को केशरियाजी या ऋषभदेव कहते हैं ।

प्रारम्भ में धुलेव ग्राम खडक प्रान्त के जवास पटटे में था । बाद में जवास राव द्वारा केशरियाजी को भेंट कर देने से इसकी व्यवस्था काष्ठामधो के भट्टारकों द्वारा होने लगो । तत्पश्चात बहुत समय के बाद किसो कारणावंश यह व्यवस्था औदोच्य जाति के ब्राह्मणो को मिली जो कि भण्डारी कहे जाते लगे । तदुपरांत किन्हीं विशेष कारणों से तीर्थ की देखभाल संबत् १९३२से उदयपुर [मेवाड़] के संरक्षण में चली गई । अतः मेवाड़ सरकार की एक कमेटी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ट्रस्टी के रुप में इसका प्रबन्ध करने लगी। यही व्यवस्था राज्य के रुप में चलती हुई इस समय राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग द्वारा हो रही है। फलस्वरुप यह मन्दिर सेल्फ सपोर्टिग (आत्म निर्भर) माना गया है। यदि जैन समाज संगठित होकर प्रयत्न करे तो मन्दिर समाज की सुव्यस्था में आ सकता है, क्योंकि यह जैन मन्दिर है। देवस्थान जो कि ट्रस्टो की हैसियत से तीर्थ का सरक्षण कर रहो है, जैन समाज के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी है।

●

ऋषभदेव का तीर्थ भारत के पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान प्रान्त के दक्षिणी भाग में उदयपुर नगर से ४१ माइल दूर एक ऊंची पहाडी पर कुंवारिका नदी से वेष्ठित सुशोभित हो रहा हैं। गांव का विकास मन्दिर के आगे हुआ हैं। अतः बारा गांव तीर्थ की वन्दना करता हुआ सा प्रतीत होता हैं इस क्षेत्र पर सहस्त्रों यात्री प्रति वर्ष दर्शनार्थ आया करते हैं, अतः उनकी सुविधा के लिये तीन धर्मशालाएं बनी हुई हैं। गांव में पानो का यथेष्ट प्रबन्ध हैं। यात्रियों की सुविधा कै लिए यातायत की भी सुव्यवस्थित प्रबन्ध हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन में कई मोटरें विभिन्न मार्गो से ऋषभदेव आती जाती है । अजमेर से अहमदाबाद तक राष्ट्रीय मार्ग उच्च सड़क जाती है जो कि देहली से भी सम्बन्ध रखती है, ऋसभदेव इस मार्ग में आता है । अतः अजमेर और उदयपुर से यात्री रास्ते से आ जा सकते हैं। अहमदाबाद से रतनपुर होते हुए इसी मार्ग द्वारा ऋषभदेव आया जाता है । दूसरा मार्ग डूंगरपुर से ऋषभदेव का है यह भी पक्की सड़क है, जो कि उदयपुर से डूंगरपूर तक बनी हुई है और प्रति दिन मोटरे आती जाती है। तीसरा मार्ग ईडर से विजयनगर होकर ऋषभदेव आता है । यह रास्ता कच्ची सडक का है । अतः वर्षा काल में बन्द रहता है । चौथा मार्ग ऋषभदेव से सलुम्बर की तरफ हैं । पांचवा मार्ग ऋषभदेव से चावण्ड सराडा होकर उदयपुर जाता है । इस प्रकार चारों ओर छोटे मोटे रास्ते बने हुए है उदयपुर अहमदाबाद तक रेल्वे लाइन है । जिससे से केशरिया-जी रेल द्वारा भी आया जा सकता है । इस प्रकार ऋषभदेव आने में पर्याप्त सुविधा है।

तीर्थ क्षेत्र पर आधुनिक युग को वैज्ञानिक सुविधाएं पर्याप्त है। गांव में बिजली तार–टेलोफोन, नल. पी. एच.सी. (औषाधालय) आयुर्वेदिक दवाखाना, हाई स्कूल, पुलिस–थाना विकास पंचायत आदि भी है ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके अतिरिक्त सेवा भावी संस्थाएं भी क्षेत्र की सफल सेवाएं कर रही हैं। इस प्रकार धुलेव ग्राम ऋषभदेव अथवा केशरियाजी के नाम से एक सुन्दर कस्बा बन गया है। इस समय गांव में लगभग ३५०० जनसंख्या है। जनता को तीर्थ क्षेत्र की सभी सुविधाएं प्राप्त हो रही है।

—५—

मन्दिर की प्रतिष्ठा व ध्वजादंडरोहण

आदि ब्रह्म भ० ऋषभदेव की मूलनायक प्रतिमाजो के इस क्षेत्र पर प्रकट होने के उपरान्त ईटों से बनाये गये साधारण जिनालय को प्रतिष्ठा कब और कैसे हुई? उसके विषय में अभी तक कोई प्रमाण भूत ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त नहीं हुई है, तथापि वि० स० १४३१ में मुख्य मन्दिर जीर्णोद्धत हुआ है, इससे स्पष्ट हैं कि साधारण जिनालय को प्रतिष्ठा आज से १००१ वर्ष पूर्व हुई होगा। तत्पश्चात मुख्य मन्दिर का वि. सं. १४३१ में जीर्णोद्धार हुआ था तब सर्व प्रथम मन्दिर को प्रतिष्ठा व ध्वजादण्डारोहण विधि हुई थी। यह प्रतिष्ठ दि० जैनाचार्य काष्ठासंघो भ० श्री धर्मकीर्ति के तत्वाधान में हुई थी, ऐसा शिलालेख से ज्ञात होता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्पश्चात वि० सं. १५७२ में निज मन्दिर के आगे की नौ चौकी और सभा मण्डल का निर्माण कार्य पूरा होना शिलालेख से प्रमाणित है। अतः उस समय खेला मण्डल में विराजमान 'पंच परमेष्ठी' को उभय प्रतिमाजी और मूल मन्दिर को प्रतिष्ठा भट्टारक यशकीर्तिजी के तत्वावधान में हुई थी तदुपरान्त १६११ और १२ में खेला मण्डल को कुछ प्रतिमाओं का प्रतिष्ठा मूल-संघी भट्टारक श्री शुभचन्द्रजी के द्वारा हुई थी। परिक्रमा के सभी जिनालय उस समय नहीं बने थे। सभी प्रतिमाएं भी खेला मण्डप में विराजमान की गई थी। बाद में उन्हें जिनालयों में प्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान की गई।

मूल मन्दिर की परिक्रमा में बने हुए जिनालय वि. सं. १६११ के पूर्व बनने प्रारम्भ हो गये थे सो सवत् १७१० में बनकर तैयार हो गये। वि. सं. १७११ में इन्द्र इन्द्राणी के हाथों से स्थापना हुई थी। जिनालयों में विराजमान प्रतिमाएं समय समय पर इसी क्षेत्र पर प्रतिष्ठित होने पर विराजमान हुई हैं। प्रतिमा लेखों से ज्ञात होता हैं। १७५४ से १८३३ तक प्रतिष्ठा के कार्य भिन्न २ समय में होते रहते हैं। जिनमें से १७५७ तथा १८६३ की प्रतिष्ठाएं बडे समारोह पूर्वक हुई थी जो कि तीर्थ के इतिहास में उल्लेखनीय हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निज मन्दिर पर १५७२ के पश्चात १६८६ वि० सं० में बाज जाति के काष्ठासंघो कोड़िया भीमा के पुत्र जसवन्त ने कलश तथा ध्वजादण्ड चढाया था इसका प्रमाण १७३० में लिखे गये स्पष्ट लेख से प्राप्त है । इसके बाद वि० सं० १७९३ में फिर से ध्वजादण्ड चढाने का प्रमाण मिला है । जो निम्न प्रकार है :—

●

संवत् १७९३ माह सुदि १ गुरुवार श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कून्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक सकल किर्ति तद् आम्नाए भट्टारक विजय कीर्ति तू शिष्य ब्रह्मनारायणोपदेशात् श्री सूरत वास्तव हूंबड जातीय लघु शाखायां सघवी श्री मनाहरदास मनजी सुत किशोरदास दयालदास, भगवानदास एवं श्री सूरत नगरादागत्य श्री ऋषभ देव कलश तथा ध्वजास्तम्भ सोडयो सं० मनाहरदास स्वपारक श्री ऋषभदेव नित्य प्रणमति ।

●

वि० संवत १८६३ में मन्दिर का परकोटा बना उस समय प्रतिष्ठा हुई और ध्वजदण्ड चढाया ऐहा ज्ञात हाता है । तत्पश्चात अभो ही वि० सं० १९८४ में सेठ पुनमचन्दजो करमचन्दजी कोटा वाले पाटन (गुजरात) निवासो ने पांच हजार रूपया नकद भेंट करके ध्वजादण्ड चढाने का विफल प्रयास किया, तब इस उत्सव में महान विघ्न हुआ और वही विघ्न तीर्थ के इतिहास में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हत्याकाण्ड़ के नाम से प्रख्यात है। अतः इस विषय में संक्षेप में भी सत्य वर्णन करना न्याय संगत ही होगा।

१९८४ का हत्याकाण्ड

(१) एतिहासिक सिंहावलोकन

निज मन्दिर के खेला मण्डल में वि० सं० १४३१ और १५७२ के अभव लेखों से यह प्रमाणित होता है कि मूल मन्दिर का जीर्णोद्धार दिगम्बर जैन भट्टारकों के तत्वाधान में शाह हरदाश के पुत्र पूंजा तथा कोता ने एवं हीसा ने करवा कर प्रतिष्ठा करवाई थी। बाद में जिनालयों का निर्माण भी काष्ठासंघो एवं मूलसंघी भट्टारकों के उपदेश से हुआ है और उन्हीं के तत्वाधान में प्रतिष्ठाएं भी सम्पन्न हुई थी मन्दिर के किलेनुमा कोट एवं मुख्य द्वार का निर्माण १८६३में सागवाडाके एक दिगम्बर जैन सेठने करवा था इसप्रकार प्राप्त शिलालेखों के आधार पर सत्य प्रमाणित होता है प्राचीन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समय में मन्दिर पर दिगम्बर जैनाचार्य भट्टारकों का आधिपत्य रहा है तीर्थ के मूलनायक भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा के दोनो ओर खड्गासन में स्थित उभय तीर्थङ्कर की प्रतिमाएं निर्गन्थ दशा में दिगम्बरत्व की द्योतक होकर दर्शन देती हैं। मूलनायक के पावासण में १६ स्वप्न दिगम्बर शास्त्रानुसार बने हैं। एवं खेला मण्डप में विराजमान पंच परमेष्ठी के मूलनायक के दोनों ओर खड़ी नग्न मूर्तियां भी दिगम्बरत्व को प्रमाणित करती हैं। इससे यह सिद्ध होता है की **मूलतः मंदिर दिगम्बर है।**

बावन जिनालयों की सभी प्रतिमाएं साक्षात दिगम्बर रुप में बिराजमान हैं तथा सारे मन्दिर के बाहर शिखरों के निचे खड्—गासन निर्गन्थ मूर्तियां दिखाई देती हैं। उक्त इतिहास इस बात का साक्षी है की मन्दिर पर मूल आधिपत्य दिगम्बर जैनो का ही था किन्तु बाद में तीर्थ के चमत्कारों से श्वेताम्बर और अन्य श्रद्धालु भक्तो का झुकाव इस ओर हुआ। कालक्रम से स्थानीय दिगम्बर जैन समाज के हाथों से मन्दिर का संरक्षण उदयपुर के महाराणा की देख रेख में तीर्थ का समुचित प्रबन्ध होने लगा। उस समय मेवाड़ सरकार में श्वेताम्बर जैन कर्मचारीयों का बोला था सो महाराणा सा० की बिना अनुमति के भी ध्वजादण्ड चढाने का जो प्रयास किया है इस पर दिगम्बर जैन समाज ने इस कार्य में अपना अधिकार सिद्ध करते हुए रोकने का प्रयत्न किया किन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्सव ने भयंकर हत्याकांड का रुप धारण किया

ध्वजादंड चढाने के साथ-साथ इस बात का प्रयत्न भी किया कि दक्षिण दिशा वाले बडे मण्डप की मूल प्रतिमाओं पर मूकुट-कुण्डल भी चढा दिये जाय। यह देखकर दिगम्बर जैन समाज ने तोव्र विरोध किया, किन्तु नक्कारखाने में तुती की आवाज कोई नहीं सुनता की कहावत के अनुसार कोई सुनवाई नही हुई। मन्दिर के हाकिम श्रीलक्ष्मणसिंहजो के आदेश से दिगम्बरों का मन्दिर से पृथक किया जाने लगा और सिपाहियों ने संकेत पाकर मारकाट शुरु की और भागने वाले मन्दिर के द्वार पर राक दिये गये द्वार बन्द कर दिया गया। सिपाहियों ने हाथों में लाठिया आदि लेकर दिगम्बरों को मारना शुरु किया। परिणाम-स्वरुप सर्वथा निरपराध ५ दिगम्बर भाई मारे गये। जिनके नाम इस प्रकार थे— पं० गिरधरलाल, परसाद के दीपचन्दजो नागदा, पूनमचन्दजो, सेमारी के माणकचन्दजो, ४४ घायल हुए और बहुतों को चोट आई। इस प्रकार जैन मन्दिर में हत्याएं होने से हत्याकाण्ड हो गया।

अनिष्ट समय में चढाया गया ध्वजादण्ड थोडे ही समय के बाद गिर पड़ा जो अब तक नहीं चढ पाया है।

केवल ध्वजा का स्तम्भ ही लगा है। उसी ध्वजादण्ड के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषय में बाद में दिगम्बर तथा श्वेताम्बर दोनों समाजों के आपस में मुकदद्में बाजी हुई और उसके लिए उदयपुर सरकार कि ओर से कमाशन बैठाया गया था जिसके निर्णय का मुख्य-मुख्य बाते निम्न प्रकार है—

(२) यद्यपि प्रारम्भ मे हो श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर दिगम्बरी मन्दिर है किन्तु किर भी प्राचीन काल से यह हिन्दू जिसमें भील भी शामिल है तथा दूसरे जनों द्वारा पूजा जाता है।

(३) दिगम्बरों और श्वेताम्बरों में किसी समाज को ध्वजादण्डरोहण की धार्मिक विधि करने से रोका गया हो यह सिद्ध नहीं हो सका है।

(४) कोई भी दल जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा या ध्वजारोहण करना चाहे तो उसे सर्व प्रथम देवस्थान महकमे से आज्ञा प्राप्त करनी होगी

इस प्रकार निर्णय होने पर मन्दिरों की देख भाल का कार्य मेवाड़ सरकार के देवस्थान महकमे द्वारा बहुत सावधानी पूर्वक ट्रस्टो के रुप में होने लगा। परिणाम स्वरुप दोनों समाज के संघर्ष से मन्दिर की देख भाल एक ट्रस्टी के रुप में राजस्थान सरकार के अन्तर्गत देवस्थान विभाग द्वारा हो रही है। यह तीर्थ सेल्फ सपोर्टिग (आत्म निर्भर) माना गया है। ट्रस्टो की हैसियत से देवस्थान विभाग जैन समाज के प्रति उत्तरदायी है। पूजन विधान का कार्यक्रम निश्चित कर देने के समयानुसार चलता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१९८४ के हत्याकांड ने जैनियों की अहिंसा में कलंक लगा दिया। धर्म के लिए बलिदान होने वाले वीर शहीद तो मरकर भी अमर हो गये और उनके बलिदान ने तीर्थ के प्रारम्भिक इतिहास को सबके समक्ष स्पष्ठ रुप से प्रमाणित कर दिया कि यह तीर्थ दि० जैन ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं यही कारण है कि उच्च न्यायालय जोधपुर में अभी ही दि० ४ जुलाई ६६ ई० को पब्लिक ट्रस्ट एक्ट के अन्तर्गत दि० जैन समाज ने रिट दायर कर अपने तीर्थ की रक्षार्थ स्तुत्य उद्योग किया है जो कि सर्वथा उचित हो है, परिणाम भी हितकर होगा ऐसी आशा हैं। अब इस प्रसंग पर अधिक चर्चा नहीं कर तीर्थ चमत्कार का वर्णन करें गें।तीर्थ के चमत्कारों ने ही इस पावन क्षेत्र को भारत में विख्यात किया हैं और इसी कारण भो लाखों नर नारी प्रतिवर्ष दर्शनार्थ आकर अपने को धन्य मानते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

-६-

तीर्थ के महत्वपूर्ण अतिशय

(चमत्कार)

प्रथम तीर्थङ्कर भ० ऋषभदेव की प्रतिमा के इस क्षेत्र पर प्रकट होने के उपरांत अतिशय बढ़ने लगा और इसी अतिशय के कारण विशाल जिन मंदिर का निर्माण हुआ। मूलनायक भगवान के चरण कमलों में अति श्रद्धा रखने वाले तीर्थ के रक्षक देवों द्वारा समय समय पर आश्चर्य जनक चमत्कार हुए हैं। दर्शनार्थ आने वाले अनेक सज्जनों की मनोकामनाएं पूरा हुई है और अनेक दुःखी व्यक्तियों ने संङ्कटों से छुटकारा पाया हैं। भ० ऋषभदेव के प्रति भक्ति रखने वाले श्रद्धालुओं को अनेक विपत्तियों में सहायता हुइ हैं। अतः यह क्षेत्र अपने अतिशय के लिए विश्व विख्यात हो गया है, तीर्थ के चमत्कारों से न केवल जैन ही वरन् अन्य धर्मावलम्बी इस ओर सद्भावना से आकर्षित हुए हैं। इस विषय में श्री ओझा सा० ने अपने राजपुताना तथा मेवाड़ के इतिहास में लिखा है :—

"हिन्दुस्तान भर में यही एक ऐसा मन्दिर है जहां दिगम्बर तथा श्वेताम्बर जैन, वैष्णव, शैव, भील एवं तमाम शूद्र स्नान कर समान रुप से मूर्ति का पूजन करते हैं।"

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिन अभिमानी व्यक्तियों ने इस तीर्थ की अश्रद्धा की और चमत्कार जानना चाहा,वे चमत्कार देखकर नमस्तक हो लौट गये। उदाहरण के लिए वि० सं० १८६३ के लगभग "सदाशिवराव", डूंगरपुर से गलियाकोट आदि गांवों को लूटकर धुलेव आया। यहां आकर वह अभिमान पूर्वक मन्दिर में जा घुसा और नीचे की बेदी के पास खडे रहकर श्री प्रभू के सामने रुपया फेंकते हुए बोला, हे जैन का देव ? यदि तू सच्चा है तो मेरा फेंका हुआ रुपया स्वीकार करले। कहते है वह फेंका हुआ रुपया वापस आया और उसके सिर पर इस प्रकार लगा कि खून टपकने लगा। फिर भी वह नही समझ सका और अपनी सेना को मन्दिर लूटने की आज्ञा दे दी। तब मन्दिर में से भंवरों की सेना टूट पड़ी। तब बडा दुःखी हुआ और बहुत सा सामान छोडकर भाग गया। इसके बाद कभी इस ओर आने का साहस नहीं किया यह प्रमाण एक दो भजन से मिलता है और यह बात इतिहास के अन्य साधनों से भी सत्य हैं। भजन की दो तीन पंक्तियां इस प्रकार है।

सुनियेरे बातां राव सदाशिव, मत चढ जाना धुलेवा।
गढपति उनका बडा अटङ्का, मत छेडो तुम उन देवा॥
गलियाकोट से निकल सदाशिव धुलेवा गढ घेर लिया।
तोपखाना तो पडा रहा ने, राव सदाशिव भाग गया॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री केशरियाजी के पवित्र नाम रुपी मन्त्र को स्मरण करने से और केशर आदि को मानता से कठिन से कठिन कार्य भी सहज में हो हुए है। ऐसा मानता भक्तिशात् लोगों में पाई जाती है। उदाहरण के लिए गुजरात के एक गांव में एक विधवा बहन के इकलौते बालक को विष भरे काले नाग ने डस लिया तब उस महिला ने केशरियाजी का ध्यान करते हुए प्रभू के चित्र के सामने घी का दीपक धुप कर, जल को नाम रुपी मन्त्र से मन्त्रित कर पिला दिया सो बालक खडा हो गया। कुछ दिन बाद उसने अपने पुत्र सहीत क्षेत्र पर आकर प्रभू को अपने पुत्र के बराबर केशर चढाई। कहते है एक मारवाडी ने सन्तान नहीं जीने की स्थिति में केशर चढाने की बाधा ली तो उसके दो सन्तान हुई वह पुत्र के रुप जीवित रही। बालक के बडे होने पर १२ वर्ष की आयु में सेठजी तीर्थ पर आये और अपने पुत्र के तोल के बराबर केशर चढाई इसी प्रकार सिरोही के सज्जन ने भी उसी समय अपने तान वर्ष के बालक बराबर कैशर तोलकर चढाई। अभी ही एक सज्जन ने ८००/- रुपयों की केशर एक साथ चढा गये है। इस प्रकार कइ लोग अपने बच्चों को चांदो रुपगे, घी, शक्कर, गुड आदि से तोलकर भगवान को चढाते है।

प्रायः यात्रियों की मान्यता रही है कि भगवान की "मानता" लेने से कार्य सिद्ध होते है। जिनके काय होन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाले होते हैं उनके लिए प्रसाद स्वरुप भगवान का पुष्प भी गिरता हैं एक रात्रि में संगीत कार्यक्रम के समय सन्तान हीन महिला के प्रार्थना करने पर एक साथ तीन पुष्प मिले। उठाने में एक निचे गिर गया और दो हाथ में रह गये। फल स्वरुप उस महिला के क्रम से तीन पुत्र हुए किन्तु एक पुत्र मर गया इस प्रकार बहुतों के मनोरथ सफल हुए हैं।

समुद्र में डूबते हुए जहाज का प्रभू के नाम से फिर से तिर जाने की बात प्रतिदिन आरती के बाद गाये जाने वाले निम्न स्तवन से ज्ञात होती हैं।

'केशरियाजी ने जहाज को लोग तिराये।
माने एहि अचरज भारी आयो॥
बीच समुन्दरजहाजडूबंता कोई आधार नही पायो।
ऋषभनाम जप्या सब साये जहाज तिर आयो॥
नाभिनन्दन जहाज को लोक तिरायो।१।

संक्षेप में तीर्थ चमत्कारों के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है। अतः भोल पटेल आदि जातियां भी प्रभू को श्रद्धा से पूजतो हैं जब कि यह दिगम्बर जैन तीर्थ ही हैं श्रद्धालुओं की आशाएं सफल हुई हैं और जिनने शुभकामनाएं चाही हैं, वे भक्त हुए हैं कुछ भी हो भगवान ऋषभदेव का दर्शन हो पापों का नाश करने वाला होने से मनोकामनाएं पूर्ण हो जाना स्वभाविक हैं ऐसे तार्थ की वन्दना कर यात्रियों को लाभ लेना चाहिये।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—७—

तीर्थ का वर्तमान रूप

[१] श्री केशरियाजी का मन्दिर :

प्राचीन इतिहास यह प्रमाणित करता है कि प्रारम्भ में मन्दिर की सारी देखभाल दिगम्बर भट्टारक के संरक्षण में थी । वि० सं० १८९० के पश्चात काष्ठासंघ के भट्टारक एवं स्थानिय भण्डारी व्यवस्था - कार्य करने लगे । तत्पश्चात भण्डारियो का कार्य सन्तोषप्रद नही होने से १९३४ के लगभग मन्दिर का संरक्षण उदयपुर के महाराणा ने अपने हाथ में ले लिया और भन्डारियों को मन्दिर को आय में से ३५ प्रतिशत देना निश्चत कर उनको सहायता से एक ट्रस्टी के रूप में क्षेत्र की व्यवस्था सम्भालने लगे । तब से मन्दिर संरक्षण मेवाड़ द्वारा हो रहा है । जो कि इस समय भी राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग द्वारा हो रहा है । हत्याकांड के बाद पूजन आदि का कार्यक्रम निश्चत कर दिया गया था जो अब तक जल घड़ी के अनुसार हो रहा है । यह घड़ी २४ मिनिट की होती हैं । कार्यक्रम इस प्रकार रहता है :

प्रातः मन्दिर की २ बजे अर्थात ७-२० के लगभग मूलनायक भगवान का जल से अभिषेक होता है । ७–४५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के करीब ३ बजती है। तब दूध प्रक्षाल होता है। दूध प्रक्षाल के समय श्री जी का मुखारविन्द देखते ही बनता है दूध की प्रबल धारा में भगवान का रुप देखकर असीम आनन्द की लहर उठती। दूध के बाद पुनः जलाभिषेक होकर "अँगपोछन" होता हैं। कच्ची घड़ी की ४ बजने पर धुपखेवन होकर केशर और पुष्पों से पूजन होती है। तत्तपश्चात बैण्ड बाजे के साथ आरती होती है, और स्तवन गाया जाता है। इसके बाद दिन में १ बजे तक केशर पूजा होती है प्रक्षाल पूजा की बोली का रुपया पुजारियो को मिलता है भण्डार में जमा नहीं होता। दिन में २ बजे तक दुन्दुभि बाजे (कृत्रिम दुन्दुभि नौबत) क साथ प्रातः की भांति जल दूध का अभिषेक होता है और फिर धुपखेवन होकर केशर पूजा होती हैं सांयकाल मूलनायक को आंगी धारण करवाते हैं जो रात्रि में ८ बजे तक रहती हैं सन्ध्या समय सुबह की भांति बैण्ड बाजे से श्री जी की आरती उतारी जाती हैं और फिर निज मन्दिर में तथा सभा मण्डप में केशरियाजी के गुणगान होते हैं। १० बजे के बाद विशेष रुप से शान्त वातावरण में भक्ति भरे स्तवन होते है। इस कार्यक्रम में जाने के लिए मन्दिर कामदार से स्वीकृति लेना आवश्यक होता हैं। इस प्रकार दैनिक कार्यक्रम चलता है दर्शनार्थ आने वाले यात्रिओं को इस कार्यक्रमानुसार दर्शन पूजन कर तीर्थ यात्रा का लाभ लेना चाहिये।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जगत पूज्य तीर्थङ्कर भगवान की जय घोषणा के रुप में प्रतिदिन ब्रह्म मुहर्त में चार बजे नौबत बजतो हैं। तत्तपश्चात दिन में प्रातः मध्याह्न और सांयकाल आरती के समय भी नौबत बजती है। इस प्रकार रात्रि में भी नौबत बजती हैं, और फिर मन्दिर का द्वार बन्द हो जाता हैं।

दिन में पांच बार नौबत बजती हैं और दो बार आरती के समय भी बेण्ड बजता हैं। इस तीर्थ पर समवशरण मण्डप अथवा जन्मकल्याण के आनन्द का आभास रहता हैं। दर्शकों को आनन्द से भगवान के दर्शन पूजन कर असीम पुण्य संचय करना चाहिये।

चैत्र कृष्णा अष्टमी व नवमी को भगवान ऋषभनाथ के जन्मदिन पर मेले का आयोजन होता हैं। इस मेले में सहस्त्रों व्यक्ति दर्शनार्थ आते हैं इसके अतिरिक्त तीर्थ पर दिप मालिका रथ आदि का उत्सव भी मनाया जाता है पर्यूषण पर्व के दिन में स्थानीय जैन समाज धर्म साधन कर पुण्य संचय करती हैं। नौचोकि की वेदी पर स्थानीय समाज की ओर से प्रतिदिन नित्य नियम पूजा होती हैं और रात्रि में प्रतिदिन शास्त्र स्वाध्याय होता हैं। ऋषभदेव में जैनों के ३०० घर हैं।

मन्दिर की ओर से यात्रियों के लिए मन्दिर के निचे स्नान करने की उत्तम व्यवस्था है। स्त्रियों के शुद्ध वस्त्र आदि का प्रबन्ध है सो यात्रियों को शौचादि से निवृत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होकर प्रातः यहीं स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन कर प्रक्षाल में पहुँचना चाहिए । मन्दिर को देखभाल के लिए निरिक्षक प्रधान के रुप में रहता है तथा अन्य कर्मचारी उसके नियन्त्रण में कार्य करते हैं । क्षेत्र पर आने वाले यात्रिओं के लिए ठहरने को तीन धर्मशालाएं हैं । धमशालाओं में सोने, बिछाने बर्तन प्रकाश आदि को व्यवस्था हैं ।

[२] पगल्याजी :

गांव के दक्षिण–पूर्व में तीन फर्लाङ्ग दूर पगल्याजी नामक स्थान है यह स्थान प्राकृतिक द्रष्टिकोण से अत्यन्त सुहावना है। भगवान ऋषभनाथ के चरण चिन्ह होने से यहां कि भाषा के अनुसार यह स्थान पगल्याजी कहलाता है बाबू कामताप्रसादजो के मतानुसार भगवान की चरण पादुकाओं वाले स्थान से धुलिया भील के स्वप्न के अनुसार केशरियाजी की प्रतिमा जमीन से निकली थो । पहले इस स्थान पर एक चबूतरा बना हुआ था । बाद में अभी हो एक नई छतरी और नये पगल्या बिराजमान हुए हैं ।

उसके उत्तरो भाग में महुवे के वृक्ष के निचे भगवान ऋषभनाथ का विश्राम स्थान बना हुआ हैं । कहते हैं भगवान इस स्थान से प्रकट हुए थे अर्थात यहीं विश्राम किया था । किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से यह कहां तक सत्य है । नहीं कहा जा सकता । हमारी राय से यह स्थान बाद में कल्पना के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आधार से बना दिया है। चरण पादुकाओं की छतरी के निकट जल से भरा एक कुण्ड और पास ही एक वर्षाति नाला हैं। पगल्याजी के दक्षिण भाग में प्रांगण के सामने सभा मण्डप बना है जिसे यहां की भाषा में "आम खास" कहते है यह एक जिनालय के रुप में हैं जिसमें केशरियाजी का सुन्दर चित्र है। मेले के समय रथ यात्रा के साथ आने वाला जन समुदाय वहां आसिन हो जाता है यदा कदा जुलुस निकलते है तब सवारी यहो आती है और सभा मण्डप में, पालकी या रथ में विराजमान प्रतिमा लाकर पूजी जाती है। वह सभा मण्डप भी अभी ही बना हैं।

[३] चन्द्रगिरि

क्षेत्र के समीपवर्ती एक पहाड़ो टीले पर एक छतरो और कुटीर तथा पास में एक लघू छतरी बनी हुई है यह छतरी भ० चन्द्रकिर्ति का स्मारक होने से चन्द्रगिरि कहो जाती है कहते हैं भगवान चन्द्रकिर्ति को मार कर मन्दिर पर उस समय के प्रबंध कर्ताओं ने अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न किया था। स्मारक उन्ही भट्टारक का बना हुआ है। एक छतरो पर १७३७ का लेख है जिससे ज्ञात होता है कि यह स्मारक ४०० वर्ष पुराना होना चाहिये।

भगवान चन्द्रकिर्ति के स्मारक की छतरो पर निर्गन्थ प्रतिमाएं एवं चरण अकित हैं, यह बड़ा सुन्दर हैं। यहाँ से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खड़े हो कर सारा ऋषभदेव दिखाई देता है। मन्दिर के आगे सारा गांव फैला है वह ऐसा लगता है मानो मन्दिर की वन्दना कर रहा हो। चन्द्रगिरि की छतरियां गांव के चारों ओर दिखाई देती है।

इस पहाड़ी के निचे सूरज कुण्ड है। इसका जल दिन में दो बार पुजारी ले जाता है। और मूलनायक के अभिषेक में काम लिया जाता है। कुण्ड के पास ही छोटा कुण्ड यात्रियों के स्नानार्थ बना हैं। तथा पास ही वर्षाति नाला है। कुण्ड पर छतरी भी बनी हुई है।

[४] कोयल तथा कुंवारिका नदी

गांव की परिक्रमा करती हुई एक छोटी सी नही वर्ष भर जल से भरी रहती है। इस नदी को कोयल या कुंवारिका के नाम से पुकारा जाता है गांव के उत्तर में इस नदी पर यात्रियों एवं स्थानीय जनता के लाभार्थ एक पक्का घाट बना हुआ है। जिस पर एक छतरी भी बनी हुई है यह घाट अभी ही बना है गांव के दक्षिण में इस नदी पर एक मजबूत पांच दरवाजों वाला पक्का पुल बना है, जिस पर मोटरें आती जाती है।

[५] भीम पगल्या

नदी के दरवाजे के पास तीर्थ के हित चिन्तक दिगम्बर जैन काष्टासंघ के सुप्रसिद्ध भट्टारक भीमसेन का स्मारक है जो कि भीम पगल्या से प्रसिद्ध है। देखने योग्य है। स्मारक प्राचीन हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[६] भ० यशकीर्ति भवन

धर्मशाला के सामने ही होलीचौक में दिगम्बर जैनाचार्य भट्टारक यशकीर्तिजी महाराज का सुन्दर भवन बना हुआ है। यह भवन महाराज श्री ने वीर सं० २४६५ में बनवाया था जो कि १००००० रु० की लागत का है इस भवन में स्फटिक एवं नीलम की प्रतिमाओं सहित चैत्यालय है तथा शास्त्र भण्डार भी है। महाराज श्री ने इस भवन का ट्रस्ट बना दिया है। यह भवन यात्रियों को अवश्य देखना चाहिए।

[७] सेवाभावी संस्थायें

ऋषभदेव में शिक्षणार्थ राज्य की ओर से उच्च विद्यालय, कन्या माध्यमिक शाला, प्राथमिक शाला, छात्राश्रम आदि हैं। तथा जैन समाज की ओर से दि० जैन विद्यालय व छात्रावास, कन्याशाला आदि संस्थाएं हैं। ये संस्थाएं ज्ञान दान दे रही हैं।

धर्म प्रचार की दृष्टि से श्री अखिल विश्व जैन मिशन की शाखा है जोकि अहिंसा प्रचार में जागरुक हैं। इसका कार्यालय पोस्ट ऑफिस के पास है। क्षेत्र की सेवार्थ दि० एवं श्वेताम्बर की पेढ़ी भीं हैं।

[८] चैत्यालय और मन्दिर

गांव में चार चैत्यालय हैं। ऋषभदेव से ८ की० मी० दूर उदयपुर के मार्ग में पीपली नामक स्थान पर एक सुन्दर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन मन्दिर हैं। यात्रियो को यहां दर्शन करने की सुविधाएं प्राप्त हैं। अतः दर्शन करने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस प्रकार ऋषभदेव एक दर्शनीय अतिशय क्षेत्र है और आज के युग की सभी आवश्यक सुविधाएं प्राप्त है। इस क्षेत्र पर प्रतिवर्ष सभी धर्मावलम्बी सहस्त्रों की संख्या में आते है और बिना किसी भेदभाव के केशरियाजी को पुजन कर घर लौटते हैं। यह तीर्थ दिगम्बर जैन होते हुए भी सर्व मान्य होने से अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक पूजा जाता है। यात्रियों की सद्भावना से दर्शन पूजन कर क्षेत्र के दर्शनीय स्थान देखने चाहिये। युग के साथ साथ स्वतन्त्र भारत में इस क्षेत्र ने भी पर्याप्त उन्नति की है और आगे भी भविष्य उज्जवल प्रतीत होता है, मन्दिर की वर्तमान व्यवस्था को दृष्टिकोण में लाते हुए दिगम्बर जैन समाज ने 'पब्लिक ट्रस्ट एक्ट' के अर्न्तगत उच्चन्यायालय जोधपुर में दिनांक ४ जुलाइ १९६६ को एक रीट दायर कर दी हैं। तीर्थ रक्षार्थ दिगम्बर जैन के लिए यही उचित हैं, परिणाम उत्तम ही रहेगा। हमने इतिहास लिखने में निष्पक्ष हो कर सत्यता अपनाई है। अतः यात्रियों को प्रमाणित इतिहास पर विचार करते हुए तीर्थ यात्रा का लाभ लेना चाहिये। भगवान ऋषभदेव के अतिशय से विख्यात यह तीर्थ सदैव जयवन्त हो।

इस शुभकामना के साथ लिखने से विराम लेते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिक्षा ही सभ्यता की जन्नी है ।
सभ्यता के बिना शिक्षा निर्मुल है ।।

आईये आपका हम
हार्दिक स्वागत करते हैं ।
आपके ही पवित्र स्थान पर एक
आधुनिक कार्य प्रणाली से परिपुर्ण
आँटोमेटिक मशीन द्वारा सुन्दर व
कलात्मक, आकर्षक प्रिन्टींग
के लिये सदैव तत्पर ।

विशेषताऐं :- सभी प्रकार का कलर प्रिन्ट, बिलबुक,
अकाउन्ट लेजरबुक, फोर कलर केलेन्डर
प्रिन्ट, तथा रेज ईम्बोज प्रिन्ट कार्टून वर्क

—: आपका अपना :—

कल्याण प्रिन्टींग प्रेस

बस स्टेण्ड के बाहर
ऋषभदेव–उदयपुर (राज०) ३१३८०२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवश्यक सूचना

आपकी सेवा में,

- जैन व वैष्णव धर्म के धार्मिक गीत व भजन की पुस्तकें।
- राष्ट्रीय प्रमुख नेताओं के रंगीन, आकर्षक चित्र
- सभी प्रकार के चित्रों की सुन्दर व आकर्षक फ्रेमिंग का कार्य उचित समय पर सस्ते मुल्य में किया जाता है।

Serving JinShasan
087617
gyanmandir@kobatirth.org

शाह महाव ... लाल भँमरा जैन

म्हाया उदयपुर (राजस्थान)

For Private and Personal Use Only